

DPN 6198

Title : भीमसेन स्तोत्र BHIMASENA STOTRA

Run. No. 6889

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र hymns

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 21 x 8.5

Folios 12

Lines ( in a page ) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator प्रतापमल्ल Prataf Malla

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 810 (written in a stray writing)

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : नेपाली : बुद्ध) यमो, बौद्ध स्तुति नं ५

Material : palmleaf / paper / thyaasaphu /

Remark : This codex also contains some other Buddhist hymns.

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

x

इति श्री महा राजा राज राजेन्द्र भूपकेसरी श्री श्री कावेन्द्र (कवीन्द्र)  
जय प्रताप मल्ल देव विचित्रा श्री श्री श्री श्री दिव्य भीमसेन स्तोत्र समाप्तः ॥ ॥



20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

उत्तमवर्णं यः सनिधनिनमुद्रकविगकाधसूर्यसुनिमन्तारिप्रतापाय  
उत्तमवर्णोऽस्ति योऽपि मुद्रकाप्युवाशात्तं गच्छन् नृपतिना संपादयति  
अत्रर्वनसूनिस्तु नृपतिना संपादयति  
इति नृपतिवक्ष्यते इति नृपतिवक्ष्यते  
इति नृपतिवक्ष्यते इति नृपतिवक्ष्यते  
इति नृपतिवक्ष्यते इति नृपतिवक्ष्यते











लासूर्यसुनिर्मलनारिललागनयुकिदुर्गमृदकायदुवासावैभिलालवृगता  
 ननसिंहा ॥ २ ॥ अर्जुनलवर्णसुनीलसकलकाकेनयवैशुद्विलन  
 गाडावधियाउलपुदसुवर्ण ॥ ३ ॥ असाहउदयिगाननसिंहा ॥  
 ४ ॥ आयनयकसुसंविननाला ॥ आयनरवाजनिनिलसुनयुनरुदु  
 दनःजनिनिलसुमकाः ॥ असाहउदयिगाननलसिंहा ॥ ५ ॥ अस्मिन्सु  
 सगैरिलमंरुसुधायाः हिंयुनिवर्णसुनकसुदिदा ॥ विनविदिगानि

खगसुदका ॥ असाहउदयिगाननलसिंहा ॥ ६ ॥ अस्मिन्सुवर्गसुसंविनयि  
 वा ॥ सिंहरुनसुगनाजलनिला ॥ काकेनखरुसुडरुमवर्ण ॥ असाह  
 उदयिगाननलसिंहा ॥ ७ ॥ अगदनिनिलयथसिविविरु ॥ गानगनाय  
 निवर्णनया ॥ अकमधगगासनिना ॥ असाहउदयिगाननलसिं  
 हा ॥ ८ ॥ अचक्रमर्लकृगनकसुयाडा ॥ लकलमलुगआयनया ॥  
 वामलचक्रविशुद्विनयादा ॥ असाहउदयिगाननलसिंहा ॥ ९ ॥



20

15

10

5

0

३ य  
 क कमलवलाशी क मा ग ल क ल चि रु दु य ल्प न नि ग न ल क दि  
 ना य ग ग न न वि ना न स रु रु रु यि ग न ल सि र्हा ॥ ८ ॥ ज म ल न र  
 वा म ल च व ग ड ड ड माल य ना रु रु रु स नि ना सर्व गु ल क ल ल क  
 वि शु द्धा व ड मि ला ग म शी म नि या रु र्हा ॥ ९ ॥ इ ति ना क म नि रु र्हा  
 न स्य रु ल्प ध ना ना क म क ना वि न वि रु ग उ स मा य ॥ १० ॥ ए र्हा  
 रु ड न मी ला क ना था या ना ग म ला उ ग ल रु नि ॥ य द्वा दि ग य नि रु र्हा

य रु नि सा लि क ल ना म

ला क या न यि ग व ल्प सा रि ना रु र्हा सि वा रु न व रु रु र्हा न मा मि शु न  
 ना र्थ ॥ १ ॥ सु म ने सु म न ल ला क या न ॥ २ ॥ ज्वा ल दि ग य नि रु  
 मि दि व ना रु न क व ल्प सा रि ना रु र्हा ग ज्वा स न ना कि रु र्हा न मा मि रु र्हा  
 स र्ना ॥ ३ ॥ द रु नि दि ग य नि रु र्हा ना रु र्हा निल व ल्प सा रि ना रु र्हा  
 ज्वा स न द रु रु र्हा न मा मि शी रु र्हा ना रु र्हा ॥ ४ ॥ न स रु दि ग य नि रु  
 सा स्या म व ल्प सा रि ना रु र्हा ज्वा स न रु रु र्हा न मा मि शी रु र्हा

रु

CMS

5

10

15

20

25

30

35



३॥ ४ ॥ यश्चिददिगयति वत्सलार्जुनं वत्सलार्जुनं सारुणां मंगलार्जुनं  
सननागहर्षं नमामि शीतवायुकिं वार्जुनं ॥ ५ ॥ वायुवदिगयति  
रिषामुत्तमं वत्सलार्जुनं सारुणां मंगलार्जुनं सननागहर्षं नमामि शीतवायुकिं  
वत्सलार्जुनं ॥ ६ ॥ उद्वदिगयति कृष्णवत्सलार्जुनं कृष्णवत्सलार्जुनं सारुणां मंगलार्जुनं  
सननागहर्षं नमामि शीतवायुकिं वार्जुनं ॥ ७ ॥ ॐ नमो दिगयति  
महेश्वरं रुद्रिकं वत्सलार्जुनं सारुणां मंगलार्जुनं सननागहर्षं नमामि शीतवायुकिं

मामि शीतवायुकिं वत्सलार्जुनं ॥ ८ ॥ अद्विदिगयति आदिनालायनं स्म  
मवत्सलार्जुनं सारुणां मंगलार्जुनं सननागहर्षं नमामि शीतवायुकिं वार्जुनं ॥  
९ ॥ उद्वदिगयति वत्सलार्जुनं वत्सलार्जुनं सारुणां मंगलार्जुनं सननागहर्षं नमामि शीतवायुकिं  
वत्सलार्जुनं ॥ १० ॥ ॐ नमो दिगयति  
मामि शीतवायुकिं वत्सलार्जुनं ॥ ११ ॥ ॐ नमो दिगयति  
मामि शीतवायुकिं वत्सलार्जुनं ॥ १२ ॥ ॐ नमो दिगयति



अला २

烟

ॐ जलं विलं साहा वि क न ल य न ॥ ॐ व ज म नु ग ह षा न था सा  
 स म्भ क थ न ॥ ॐ व ज म नु ग ह षा न का न य ॥ ॐ क र द य सा हा  
 ल क ध न ॥ ॐ व म धा न न ह षा हा ज्ञा द थ न ॥ ॐ ध म ल ग व हा हा  
 यि का य ॥ ॐ स्र व नि छि व ज सा हा था य ना या म  
 ॐ न म भू धा या व ह न्द गी व ज स ल भु व न व न गु ल् सर्व व ह र ग व न् नाना व य  
 न् न न नि मि न क य ह ल् मृ ति र्ग म नु सा न् ध म्मा क र नि स्र नि व न् जि न् व म ह न्

३३

धर्मेवञ्जयातु सर्वानववन्था युग्मपुकार्यं दहिनामूकहता सर्ववर्द्धनयनकेष  
 म्मयातु नमस्तुते गुरुज्ञानकानिमित्ता वज्रसखयातु भाद्रपदकानामेति नानलव  
 स्मि ज्ञानवृत्तासयनिवृत्तिगविरुविजयातु श्रीवज्रसख भामसमसिनमानमा  
 मि यस्मीसनास्रनस्रननपदा र्वयत्रयातमलितारुमनासिलामुनि र्वसिद्धिमा  
 धनयया महानिधान शकनार्थवननयकास श्री वज्रातुलाकनाध सनवन  
 निमिर्ग यादपंसाल दि वृद्धिवर्ग सकनगुनतनि धमनाजाविकु र्वयामा



20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

६५

हावलिकवज्ञमन्त्रजन्त्यावदे ॥ ५ ॥ नम्यस्त्रुविनिर्मिगमलवसननिपसुतदुर  
 धूलिहूननिर्जितविष्मगि। वनमन्दनं धानपक्षयनखनदानहानि हनद्रुतवशादना ॥  
 तच्चनान्नक्षत्रधिनमदिनायानयानहानत्यनं ॥ ६ ॥ द्रुक्कस्मस्मस्मवन्धनमकनन्यपनि  
 भावनं दीपि। स्मस्मस्मनिर्मितलनचितकटिगटगमनी। केयकाधियमानगपुनानि  
 निजगहनायके। दायदीनचराचकषेहामुदितरुयगियावकी ॥ ७ ॥ शालिङ्गकवि  
 बलिपिवनयमसिद्धिदयकी मुजगत्रावेदगवाडुसुललितवाहवदनविनामिरी ॥



20

15

10

5

0

जन १  
 न किमिदं विजयता धित निषिलभा दनमानसं ॥ दहनकाननैयुधावनदाहजनतससक  
 द ॥ नीलर्यक वास र्गभरित विमलकनवनधामिनी वामजानूसकासनालयमध्य  
 साधुनिवासिनी ॥ धनयकमहाविष्णुलसदकसखगतागिनी ॥ डोयदीमनिर्ममाल  
 विविधसुखवत्तयापदासिनी ॥ एतन्नाथविष्णुकाकनमूदिद्वयससवितं पञ्चवर्ण  
 सुमनसवकसकलमान ॥ तारावितं पञ्चपयालकमानयागिनिग ॥ होयपतिहृगका  
 कीक्षाधिकर्णिककिमद्युलवसगितयतिवसरावर्क ॥ १० ॥ शुक्लदहनृत्तमसंगम

य  
 लघनवयरीतिदरीमदं तयानकाननरधिनयक मेदी ॥ अकमालमहाईक  
 लक्ष्मणाथमहावर्ण ॥ दीपिनेमसकं वृक्षं धुलविततकिलकिलयुक्ता ॥ ११ ॥ शुक्ल  
 दासु धातननवनययलानचिलानाचनी ॥ यष्टलैवितकृदिकुडाकनिगित  
 नखनदनागिनी ॥ नदहमानविलेपिताचलनमहायतिवसरासिनी ॥ चिकयामिदिग्मदि  
 नामयिरीयललकनयुगलासिनी ॥ गारायकनाजगुरैवदेववसनियदिजनरुसक क  
 ह ॥ मसकसहितवन ॥ विजयनकनवामक ॥ १२ ॥ अमंगनसकदादयिगुजतिजयचयनिर्मल

CMS

5

10

15

20

25

30

35







अवि धिवनमधरद्व कृतमनि नमनिनव तस्मिन्मिह  
 विनातसिधनन नितेकात्रसाधकहयुहलन ॥ वंद ॥  
 यि कासनि धिसितवतवलथ जीवतसदाकृतनिगय  
 वातदिवाकलसमशयितलित सहजौ नन्दयञ्जनवति  
 त ॥ वंद ॥ नविगवायुविकूनयय नन स्वदित दन ॥ ५

यावत्समर्द्ध ॥ अथलवदनशासायितह सद्धननयकृति  
 कृतमह ॥ वंद ॥ सर्ववदुवा सकन य नलावनयावित  
 नविमृदु कलत्रकेसुमविनिमित्तमान मूढमालमनि  
 यविसोल ॥ वंद ॥ नकुयानमदितवननन उद्धपादतान  
 कतरुडा ॥ सिधुनितिकविनाजिराल लकृतिरुति  
 ॥ १ ॥ नवधाय महामय ॥ श्री श्री श्रीरिमम ननम ॥ श्रीरिमम न  
 म न



नविमिदं त कालं ॥ वद ॥ श्री लने सुत द न नयज म  
 दनं क्ख्या ॥ नवल व द न ॥ वद ॥ कू द नय गल वि-  
 निगान लं कि त न न ॥ वद ॥ क न ना का  
 मल सुविमेल ह द न ॥ वद ॥ हि स मि हि न व ॥ मि ह स द य  
 त अ म न सा ध क सि के न ॥ वद ॥ न न ति र ग धि स सु ल ॥ वद  
 यदि शा ॥ व नि ग त न न ॥ कि क ल मि व व नू र्व व र

१॥ ग व ल य ॥ म र व क ल ॥ सा ता सा र्क ॥ व य ग रा ॥ व र व क ॥ म न व  
 ॥ मि ह द न न ॥ वि य न ना र्क ॥ न म र्क ॥

क नू र ॥ व व ल य ता व न डि प ति र नि न ॥ वि त्र न  
 न म र्क ल न मि र ॥ वद ॥ ॥ ति श्री र मा हा ला ज ॥ य ता ज ला ज ला ज  
 ल सु क ला ज व का धि ॥ वद ॥ श्री र क दि ल ज व य य ता य म ल वि ज र ना र्क ग स  
 सु व ग ॥ १० ॥ स क र्क न र्क ग न मा लि नि न म उ ग म म ॥ ॥ न म व क य ग न व  
 र मा य ता न न म र्क य म ह त म ज द वा सा डि म र्क व न क र्क न य  
 ॥ न म र्क लो क नी य म य ना ग म ला द क ता य व दि ग य डि ॥ नू र्क क वा र वि  
 न न व र्क रि डा ह गि वा ता न व र्क र्क न मा मि श्री री सु न ना र्क वा ता ग म न र

न

20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35



